# राजनीति विज्ञान मे मार्टिन हाइडेगर का अस्तित्ववाद

***डॉ. शकील हुसैन**

**संक्षेप**

राजनीति विज्ञान में अस्तित्ववाद का नाम सामान्यतः ज्यां पाल सार्त्र के साथ जुड़ा हुआ है। सार्त्र ने ही अस्तित्ववाद को एक राजनीतिक दर्शन का रूप दिया अन्यथा अस्तित्ववाद दर्शनशास्त्र की विषय वस्तु है और वहीं इसकी विषद व्याख्या होती है। इसी कारण अस्तित्ववद के मूल दार्शनिकों ***हुसर्ल और मार्टिन हाईडेगर*** जिन्होने ***बीईंग*** की विषद व्याख्या की है, उनको दर्शनशास्त्र में पढ़ाया जाता है। राजनीति विज्ञान में हाईडेगर की चर्चा केवल सार्त्र के अस्तित्ववाद को समझने के संदर्भ में की जाती है वस्तुतः अस्तित्ववाद एक जटिल दर्शन है जिसको समझने के लिए अस्तित्व की दार्शनिक व्याख्या आवश्यक है राजनीति विज्ञान में अस्तित्व के राजनीतिक पक्षो पर ही जोर दिया जाता है जिसके कारण अस्तित्व की मूल व्याख्या नहीं हो पाती जिसके कारण अस्तित्ववाद को समझना दुष्कर हो जाता है। इसीलिए हाईडेगर के चिंतन की राजनीति विज्ञान में उपयोगिता स्थापित होती है प्रस्तुत शोधपत्र में हाईडेगर को एक राजनीतिक दार्शनिक के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है जिसके लिए उसके ***अस्तित्ववाद, बिईंग और दासेन*** की व्याख्या की गई है।

**प्रमुख शब्दावली :** बीईंग, दासेन, फैक्टिसिटी, फालिंगनेस, गाड, जनरल, टाइम,, वर्ल्ड।

**जीवनी - Biography**

मार्टिन हाइडेगर जन्म 20 सितम्बर 1887 को जर्मनी के एक रूढ़ीवादी और धर्मप्राण कस्बे **मेसकीर्क MESSKIRCH** मे हुआ। मेसकीर्क की धार्मिकता का उसपर गम्भीर प्रभाव था। इसी प्रभाव के कारण उसने प्रारम्भ मे **धर्मशास्त्र Theology** की पढ़ाई की। बाद मे उसने धर्मशास्त्र की पढ़ाई छोड़कर दर्शनशास्त्र की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद 1915 मे उसने **फीरबर्ग Freiburg** अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया। 1917 में उसका विवाह हुआ। प्रसिद्ध दार्शनिक **हन्ना अरेण्ट** के साथ उसकी घनिष्ठ मित्रता भी बहुत चर्चित थी।

**Brentenk ब्रेन्टनों** और **अरस्तू - Aristotle** को पढ़ने के बाद उसकी दर्शन में अगाध रुचि पैदा हुई। **Kant-काण्ट** का भी उस पर गम्भीर प्रभाव था। तत्कालीन महान दार्शनिक **हुसर्ल Husserl** का वह सहायक बना। अतः हाइडेगर पर सबसे अधिक प्रभाव हुसर्ल का ही पड़ा। उसकी कृति **टाइम एण्ड बीइंग ( समय और अस्तित्व )** पर हुसर्ल का प्रबल प्रभाव स्पष्ट रूप से

* विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, शास.वि.या.ता.स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग, छत्तीसगढ़

दिखायी देता है। यह कृति उसने हुसर्ल को ही समर्पित भी की है। **मारबर्ग Marburg** विश्वविद्यालय मे 1923-28 तक पढ़ाने के बाद उसने उसने **फिरबर्ग विश्वविद्यालय** मे प्रोफेसर का पद ग्रहण किया जो हुसर्ल की सेवानिवृत्ति से खाली हुई था। **1933 में उसने नाजी पार्टी की सदस्यता ले ली** तथा विश्वविद्यालय का **रेक्टर Rector** चुना गया। इस समय उसने हिटलर का समर्थन भी किया। क्योकि वह मानता था कि महान नेतृत्व मे ही अस्तित्ववादी निराशा से मुक्ति सम्भव है। इस समय के उसके कई भाषण बड़े प्रसिद्ध है। लेकिन 1934 से ही हाईडेगर ने नाजी पार्टी से दूरी बनानी शुरू कर दी थी। फीरबर्ग मे ही 26 मई 1976 को उसकी मृत्यू हो गयी। दर्शन शास्त्र मे तो उसकी देन अमूल्य है , **राजनीतिक दर्शन मे भी अपने अस्तित्ववादी दर्शन से अमर हो गया ।**

**मुख्य कार्य Major Works**

**1- बीईंग एण्ड टाइम BEING AND TIME 1927**

**2- व्हाट इज मेटाफिजिक्स What is Metaphysics -1929**

**3- द इसेन्स आफ ट्रुथ The Essence of Truth 1930**

**4- लेटर आन ह्यूमैनिज्म Letter on Humanism 1947**

**5- एक्जिसटेन्स एण्ड बीईंग Existence and Being 1949**

**6- क्वेश्चन कन्सर्निंग टेक्नोलाजी The Question Concerning Technology 1954**

**7- व्हाट इज फिलासफी What is Philosophy 1956**

**8- डिस्कोर्स आन थिंकिंग Discourse on Thinking - 1959**

**9- व्हाट इज ए थिंग What is a Thing 1962**

**10- द एण्ड आफ फिलासफी The end of Philosophy 1973**

**हाइडेगर और हुसर्ल को राजनीति विज्ञान मे क्यों पढ़ा जाए ?**

वस्तुतः हाइडेगर दार्शनिक है और दर्शनशास्त्र में उसे व्यापक रूप से पढ़ा जाता है। सीधे तौर पर उसने राज्य और राजनीति पर बहुत ज्यादा विचार भी प्रकट नहीं किए हैं। हाइडेगर को बहुत अधिक विश्वविद्यालयों में राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम में रखा भी नहीं गया है। अतः यह प्रश्न उठता है की हाइडेगर को राजनीति विज्ञान में क्यों पढ़ा जाए ? इसके कुछ प्रमुख तर्क है - वास्तव में मार्टिन हाइडेगर अस्तित्ववाद का पूर्ववर्ती दार्शनिक है। अस्तित्ववाद के जो प्रमुख दार्शनिक हैं जिन्हें हम अस्तित्ववाद में पढ़ते हैं उनमें सबसे प्रमुख है नाम **सार्त्र** का है। सार्त्र का अस्तित्ववाद राजनीति विज्ञान के लिए विद्यार्थी के लिए एक जटिल विचारधारा है। जिसने **बीइंग एण्ड नथिंगनेस** मे इसका विश्लेषण किया है। उसके **बीइगं** को समझना आसान नहीं है। यहीं पर हाइडेगर की और **हुसर्ल** की उपयोगिता स्थापित होती है। क्योंकि अस्तित्ववाद का मूल विचार **अस्तित्व (बीइगं )** है। अतः अस्तित्व को ठीक से

समझने के लिए इन दार्शनिकों को समझना बहुत आवश्यक है जिन्होंने अस्तित्व की बहुत स्पष्ट और गहरी व्याख्या की है। उनमे दो नाम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है **हुसर्ल** और **मार्टिन हाइडेगर।** राजनीति विज्ञान में पढ़ने का प्रधान तर्क यह है कि हाइडेगर हुसर्ल के शिष्य थे और उनके साथ काम करते थे हाइडेगर तो फिर भी राजनीति विज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण स्थान पा गए लेकिन **हुसर्ल** को सामान्यतः राजनीति विज्ञान मे नही पढ़ाया जाता। लेकिन अस्तित्ववाद को समझने के लिए **हुसर्ल** की **फेनामेनालाजी** को समझना बहुत आवश्यक है। हाइडेगर पर हुसर्ल के फेनामेनालाजी का ही गहरा प्रभाव है और हाइडेगर के **बीइंग और दासेन ( अस्तित्व)** का प्रभाव **सार्त्र** के अस्तित्ववाद पर पड़ा है।

अतः हाइडेगर की मूल उपयोगिता यह है कि हाइडेगर को समझने से अस्तित्व की व्याख्या हो जाती है जब अस्तित्व की व्याख्या हम समझ लेते हैं तो अस्तित्ववाद और अस्तित्ववादी दार्शनिको समझना आसान हो जाता है।

संक्षेप में कहा जाए तो सार्त्र को समझने के लिए हाइडेगर और हुसर्ल को समझना जरूरी है। इसलिए हाइडेगर के अस्तित्व संबंधी विचार पर ध्यान केंद्रित किया गया है और उसके कुछ ऐसे अन्य विचार जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति विज्ञान की विचारधाराओं और अवधारणाओं से संबंधित हैं उनकी उनकी भी संक्षिप्त व्याख्या की गई है।

## हाइडेगर पर हुसर्ल का प्रभाव

हाइडेगर ने अपनी कालजयी पुस्तक **Being and Time** हुसर्ल को समर्पित की है। हुसर्ल का हाइडेगर पर प्रभाव इसी से स्पष्ट है। हाइडेगर हुसर्ल की फेनालेलाजी का प्रभाव स्वीकार करते हुए भी यह मानते हैं कि यह असल मे हुसर्ल का मौलिक चिन्तन नहीं है बल्कि यूनानी दार्शनिकों की देन है। यूनानी दार्शनिक इसके लिए ग्रीक शब्द **एथेलिया Athelia** " का प्रयोग करते हैं। जिसका अर्थ है

**सत्य का अनावरण या खोज।** हुसर्ल की फेनामेलाली का मूल उद्देश्य **Pure ego - शुद्ध चेतना** को उद्घाटित करना है। इसके लिए **विषय( सब्जेक्ट)** के वास्तविक अस्तित्व को जानना जरूरी है। **विषय या अस्तित्व के इसी शुद्ध रूप का प्रभाव हाडेगर और अन्य समस्त अस्तित्ववादी दार्शनिको पर पड़ा।**

हाइडेगर इसे स्वीकार करते हैं कि फेनामेनालाजी के बिना वे **बीइंग** की गवेषणा नहीं कर सकते थे। लेकिन हाइडेगर के दर्शन का उद्देश्य हुसर्ल से अलग है। हुसर्ल का ध्येय अनुभवालीत आत्मा या चेतना की प्राप्ति हैं। जबकि हाइडेगर का लक्ष्य Being- अस्तित्व की एवं **Being an world अस्तित्व और विश्व** के अन्तर्सम्बन्ध की व्याख्या है। हाइडेगर की यही व्याख्या **अस्तित्ववाद Existentialism** का आधार बनी। यद्यपि हाइडेगर की व्याख्या **Ontological - सत्तामूलक** है जबकि अस्तित्ववादियो सार्त्र आदि की व्याख्या अपेक्षतया **Metaphysical - तत्वमिमांसीय** है।

**हाइडेगर का चिन्तन**

अपनी प्रसिद्ध रचना **' बीइंग एंड टाइम'** में उसने अस्तित्ववादी विचार दिए है। हाइडेगर के अनुसार अस्तित्व की व्याख्या अभी तक हमने भौतिक रूप में की है अर्थात अस्तित्व का संबंध किसी बाहरी वस्तु से माना हैं। लेकिन ऐसा नही है। क्योकि जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि हमारा अस्तित्व क्यों है ? तब पता चलता है कि इस अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं है। सार्त्र इत्यादि ने अस्तित्व की व्याख्या इसी प्रकार से की है। अतः यह सार्त्र की परंपरा का ही अस्तित्ववादी विचारक हैं। अधिकांश अस्तित्ववादियों की भांति **मार्टिन हाइडेगर भी नास्तिक है** मार्टिन हाइडेगर का अस्तित्ववाद **सार्त्र** के अस्तित्ववाद की तुलना में **नीत्शे** से अधिक समानता रखता है सार्त्र का अस्तित्ववाद किसी हद तक निराशावादी है किंतु मार्टिन हाइडेगर नीत्शे के विचारों के अनुरूप हिंसा और राज्य की सर्वश्रेष्ठता पर विश्वास करता है। इसी कारण कालांतर में उसने नाजी वादी पार्टी की सदस्यता भी ग्रहण की। हाइडेगर का अस्तित्ववाद सार्त्र की तुलना में अधिक दार्शनिक है। अस्तित्व की जो व्याख्या हाइडेगर ने की है जर्मनी की मूल विचारधारा है और वह हुसर्ल के दर्शन के अधिक निकट है।

**दासेन- DASEIN क्या है ?**

इसका अर्थ Being "अस्तित्व" है, मगर Dasein सांख्य दर्शन पुरुष की भाँति प्रकृति को धारण करता है। इस अर्थ मे यह एक धारक है, लेकिन यह सांख्य पुरुष की भांति एक वचन नहीं है, बहुवचन है। क्योकि हर व्यक्ति दासेन है। चराचर जगत मे जो भी पदार्थ और विचार है उनका अस्तित्व अनुभव किए जाने पर ही है। यह अनुभव कर्ता **दासेन** है। अतः दासेन धारक है, इसकी सत्ता स्वतंत्र है, स्वायत्त है, निर्पेक्ष है, किसी पर आश्रित नही है। लेकिन यह दासेन की साधारण विशेषता है- उसकी मूल विशेषता कि ***Dasen is the king of being who asks the Question Being. जो अस्तित्व का प्रश्न पूछ सके और उसका उत्तर प्राप्त करने को उत्सुक हो वही दासेन या बीइंग है।*** ( हाईडेगर : 1927) साधारण शब्दों मे दासेन धारक है जो बीइंग या अस्तित्व की खोज करता है, उसे अनावृत करता है, या पदार्थ या विचार विचार के मूल रूप को देखता है। दासेन के इस अर्थ की जटिलता कारण हाइडेगर यह कहते है कि दासेन परिभाषा देना सम्भव नहीं है। यह अपरिभाषेय हैं। यह परिभाषित किए जाने से अधिक **अनुभूति Experience** का विषय है, लेकिन यह अनुभूति स्वयंभू है, किसी पर आश्रित नही है, यह प्रज्ञा भी नही है।। इसी कारण हाइडैगर को अबुद्धिवादी विचारक कहा जाता है।

दासेन के अपरिभाषेय होने का कारण यह ही हाइडेगर Metaphysics या तत्व मिमांसा की आलोचना करते हैं। और यह मानते कि तत्वमिमांसा मे फंसे होने कारण ही संसार Question of Being अस्तित्व के मूल प्रश्न से भटक गया है। संक्षेप मे पदार्थ के मूल स्वरूप को खोजने की बजाए यह देखना पहली आवश्यकता है कि उसका अस्तित्व है भी या नही। अतः अस्तित्व का प्रश्न ही मूल प्रश्न है। इस दृष्टि से यह **Ontology सत्ता विज्ञान** का प्रश्न है- लेकिन यह ओन्टोलाजी तर्क या द्वन्द्ववादी पद्धति पर खड़ी नही की जा सकती।

## बीईगं - BEING दासेन् - DASEIN

दासेन - DASEIN - हाइडेगर के चिन्तन का केन्द्रिय विचार है। यह जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अंग्रेजी रूपान्तरण **बीइंग** और हिन्दी रूपान्तरण **अस्तित्व** है। लेकिन वास्तव में **DASEIN** का किसी भी भाषा में सही सही रूपान्तरण सम्भव नहीं है। हिन्दी में इसका सही अर्थ होगा **धारक या द्रष्टा** | इस दृष्टि से भारतीय सांख्य दर्शन के **पुरूष** विचार के अधिक निकट है। संसार में विद्यमान वह व्यक्ति जो कुछ धारण कर रहा है या देख रहा है, और उसके चारो ओर कुछ न कुछ है। दासेन के हिन्दी अनुवाद की इस कठिनाई के कारण रूपान्तरण या प्रयोग न कर **दासेन** शब्द का ही प्रयोग किया जाएगा।

हाइडेगर के अनुसार अबतक के विज्ञान, दर्शन और समस्त बौद्धिक जगत की एक ही समस्या रही है, **The problem of Being दासेन की समस्या** | जबकी हम अन्य चीजो की खोज और व्याख्या में लगें है जिसका कोई अर्थ नहीं है। क्योंकि सबका अस्तित्व इसी दासेन या Being पर निर्भर है। अत: Being या dasein को जाने बिना अन्य कुछ भी जानना बेकार है- उसका कोई अर्थ नहीं है। इसलिय हाइडेगर के अनुसार **Problem of the world is that we have forgotten the Question of Being.** अर्थात् विश्व की मूल समस्या यह है कि हम Bieng के प्रश्न को भूल गए है। " *यह प्रश्न आज भुला दिया गया है। भले ही हमारे समय में हम 'तत्वमीमांसा' को फिर से स्वीकृति देना प्रगतिशील मानते हैं, लेकिन फिर भी जिस प्रश्न पर हम बात कर रहे हैं वह कोई साधारण प्रश्न नहीं है। यह वह प्रश्न है जिसने प्लेटो और अरस्तू के शोधों को प्रेरणा दी, लेकिन उसके बाद वास्तविक जांच के लिए एक विषय के रूप में कम हो गया।* ( हाईडेगर : 1927) दूसरे शब्दों में हमारी समस्याओं था मूल कारण हम Dasein या Being या अस्तित्व को भूलने के प्रश्न से भटक गए हैं। **The problem of is the world deviation from the Question of "Forgiveness of Being.** इसलिए Being का अनावरण या उसकी खोज ही मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। उसका प्रसिद्ध कथन हैं: कि **Man alone of all existing things. experiences the wonder of all wonders; that there are things-in Being " (** what is Metaphysics) **सभी विद्यमान वस्तुओ मे से में केवल मनुष्य ही आश्चर्यो के इस आश्चर्य का अनुभव करता है कि अस्तित्व में ही वस्तुओं का अस्तित्व (Thing-in-being) है** । लेकिन प्रश्न यह उठता है कि Dasein है क्या? इसकी परिभाषा क्या है ? "ऐसा कहा जाता है कि 'अस्तित्व' सबसे सार्वभौमिक और अवधारणाओं में सबसे खाली है। इस तरह यह परिभाषा के हर प्रयास का विरोध करता है। न ही इस सबसे सार्वभौमिक और इसलिए अपरिभाषित अवधारणा को किसी परिभाषा की आवश्यकता है,क्योंकि हर कोई इसका लगातार उपयोग करता है और पहले से ही समझता है कि इसका क्या मतलब है। इस तरह, जो प्राचीन दार्शनिकों को लगातार कुछ अस्पष्ट और छिपी हुई चीज़ के रूप में परेशान करने वाला लगता था, उसने एक स्पष्टता और आत्म-साक्ष्य प्राप्त कर लिया है, ताकि अगर कोई इसके बारे में पूछता रहे तो उस पर विधि की त्रुटि का आरोप लगाया जाए।" ( हाईडेगर : 1927)

इस प्रकार यह अपरिभाषेय तो अवश्य है किंतु यह अज्ञेय नहीं है। यह पूर्णत ज्ञेय है , किंतु उसके ज्ञान की तलाश में हम सामर्थ्य बर्बाद करते हैं जबकि यह बुद्धिगम्य नहीं है। यही अस्तित्व का मूल प्रश्न है। अस्तित्व का प्रश्न अनस्तित्व की व्याख्या नहीं है बल्कि जो अस्तित्व ज्ञेय है उसका तर्क बुद्धि द्वारा इसका ज्ञान संभव नहीं है यह तो अनुभूति का विषय है। इसीलिए हाईडेगर को

अबुद्धिवादी कहा जाता है। हाईडेगर के अनुसार जो कुछ बुद्धिगम्य है वह ***अस्तित्व*** नहीं बल्कि तत्व या पदार्थ है वह सत्ता मीमांसा और ज्ञान मिमांसा एवं तत्वमिमांसा में अंतर करते हैं उनके अनुसार अस्तित्व सत्तामीमांसा का विषय है न कि तत्वमीमांसा का। उनकी संपूर्ण अस्तित्ववादी विवेचना सत्ता मूलक है ओंटोलॉजिकल है यह तत्व मिमांसीय नहीं है। इसलिए बीइंग Being एवं being (बीइंग्स) में वे सत्ता मूलक अंतर करते हैं यह सत्ता मूलक अंतर ही उनके विश्लेषण का प्रमुख केंद्र है और हम जिन्हे अस्तित्व को समझने की कोशिश करते हैं वह एंटी है मूल अस्तित्व नहीं है वह एक्जिस्टेंस तो है लेकिन डसेन नहीं है इसलिए प्लेटो से लेकर अभी तक की तत्वमिमांसा और ज्ञान मीमांसा की समस्या यही है कि वह सत्ता मीमांसा से भटक गए पश्चिमी दर्शन की मूल समस्या यही है कि वह अस्तित्व की सत्ता मूलक अंतर को नहीं समझ सके और इस दृष्टि से अस्तित्व को भुला दिया गया है इसलिए मूल प्रश्न इस अस्तित्व की खोज है इसको स्पष्ट करने के लिए हाईडेगर विस्तृत उत्तर देते हैं और उसकी कुछ विशेषताएं भी बताते हैं *'''अस्तित्व' सबसे सार्वभौमिक और सबसे खोखली अवधारणा है। इस तरह यह परिभाषा के हर प्रयास का विरोध करता है। न ही इस सबसे सार्वभौमिक और इसलिए अपरिभाषित अवधारणा को किसी परिभाषा की आवश्यकता है, क्योंकि हर कोई इसका लगातार उपयोग करता है और पहले से ही समझता है कि उसका क्या मतलब है। इस तरह, जो टीपी'- प्राचीन दार्शनिकों ने लगातार कुछ अस्पष्ट और छिपी हुई चीज़ के रूप में परेशान करने वाला पाया, उसने एक स्पष्टता और आत्म-साक्ष्य प्राप्त कर लिया है, जैसे कि अगर कोई इसके बारे में पूछता रहता है तो उस पर विधि की त्रुटि का आरोप लगाया जाता है।''*

*( हाईडेगर : 1927)* हाइडेगर इस बात की कठोर आलोचना करते हैं की तत्वमिमांसा और ज्ञान मीमांसा के आधार पर ओंटोलॉजी खड़ी की जाती है तथा अस्तित्व को समझने की कोशिश की जाती है। वह हीगल की इसीलिए आलोचना करते हैं क्योंकि उसने ऐसा किया। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि तर्क या **डायलेक्टिकल मेथड के आधार पर कोई ओंटोलॉजी खड़ी नहीं की जा सकती ओंटोलॉजी को समझने के लिए *बीइंग* को समझना आवश्यक है**। हाइपोथेसिस बनाकर बीइंग को समझा नहीं जा सकता क्योंकि ***रियल*** या ***सत्*** सब्जेक्टिव है अर्थात विषयनिष्ठ है और यदि इसकी हम विषयनिष्ठा को निकलते हैं तो यह वस्तुनिष्ठ हो जाता है अर्थात यह ऑब्जेक्ट है या इसे समझने के लिए हम किसी दूसरे ऑब्जेक्ट का सहारा लेते हैं। जैसे सत को समझने के लिए असत का सहारा लेते हैं। धार्मिक चिंतकों ने भगवान को ऑब्जेक्ट बनाकर स्वयं को जानने की कोशिश की जबकि विश्लेषण की मूल इकाई ***बीइंग*** होनी चाहिए बीइंग को जानने के लिए हमें ***रियल मैन*** मे जो अस्तित्वमान है उसी को जानना होगा रियल मैन को हम किसी बाहर के ऑब्जेक्ट से चाहे वह ज्ञान ही क्यों ना हो नहीं जान सकते। हीगल की आलोचना उसने इसीलिए की कि हीगल ने ***कैटिगरीज*** का निर्माण करके ***एब्सलूट*** या ***वास्तविक सत्य*** को जानने की कोशिश की। जबकि ***बीइंग या दासेन*** का विश्लेषण करके ही हम वास्तविक सत् को जान सकते हैं। कैटिगरीज के माध्यम से जो की एक बाहर का ऑब्जेक्ट है हम एब्सलूट को नहीं जान सकते। इसीलिए बीइंग जो सत्तासीन है वह बीइंग इन वर्ल्ड है। विश्व से बाहर उसकी कोई सत्ता नहीं है उसका कोई अस्तित्व नहीं है जो अस्तित्वमान है संसार में ही अस्तित्वमान है। उसके अस्तित्व को समझने के लिए उसकी मूल सत्ता को समझना होगा उसकी सत्ता किसी दूसरे पर आश्रित नहीं है अस्तित्व स्वयं में अस्तित्वमान है।

*''हमारी जांच की शुरुआत में विस्तृत जानकारी देना संभव नहीं हैकि वे प्राचीन ऑन्टोलॉजी में ही निहित हैं, और उस ऑन्टोलॉजी की पर्याप्त व्याख्या करना तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि अस्तित्व के प्रश्न को स्पष्ट नहीं किया जाता है इसलिए हम इन*

*पूर्वधारणाओं की चर्चा केवल उस बिंदु तक ले जाएँगे जहाँ अस्तित्व के अर्थ के बारे में प्रश्न को फिर से बताने की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। ऐसी तीन पूर्वधारणाएँ हैं।"* ( हाईडेगर : 1927 पृ 22)

**1- लिविंग अहेड**

हाईडेगर के अनुसार रियल मैन घटना प्रधान है। स्वयं में अस्तित्वमान होने के कारण वह भविष्यगामी है, भविष्य की योजनाएं बनाता है, कार्यों को गुण और गुण के आधार पर परखता है। उसे अपने उत्तरदायित्वो और जिम्मेदारियां का एहसास है। वह अपनी समस्त जिम्मेदारियां को निभाता हैं। अस्तित्वमन होने का अर्थ या नहीं कि यह कोई बौद्धिक व्यायाम है, संसार से मुक्ति है, संन्यास है, या किसी अन्य प्रकार की भी विरक्ति है। अस्तित्व का ज्ञान होने का अर्थ है रियल मैन या दासेन को जानना , जो एक सक्रिय क्रियाशील अस्तित्वमान मनुष्य है। जिसके सामने सदैव अस्तित्व का प्रश्न उपस्थित रहता है जिसे वह जानता है और जिसके आधार पर वह संसार को जानता है और इसी आधार पर वह अपने कार्य योजनाएं बनाता है। इसलिए दासेन भविष्यगामी है लिविंग अहेड है। ( हाईडेगर : 1927 पृ 37)

**2- फैक्टिसिटी**

दासेन वास्तविक तथ्यों को जानता है। वास्तविक तथ्यों को जानने का अर्थ घटनाओं को जानना नहीं है, जैसे कल बर्फ गिरी थी यह घटना है और एक वास्तविक घटना है। लेकिन यह ***फैक्टिसिटी*** नहीं है। इन घटनाओं को जानना *फैक्टिसिटी* नहीं है रियल मैन या दासेन की ***फैक्टिसिटी*** सब्जेक्टिव है अर्थात यह अस्तित्व के बारे में ज्ञान होने का तथ्य ही ***फैक्टिसिटी*** है। जैसे "**मैं संसार में हूं"** जब इसका ज्ञान हो जाता है तो इससे संबंधित सारे प्रश्न भी उपस्थित हो जाते हैं कि मैं संसार में कैसे आया हूं ? कब आया हूं ? और इस संसार में कैसे बना हूं ? हमारी गतिविधियों का जीवन का उद्देश्य क्या है ? दासेन यह सब देखता है, इस समस्त अस्तित्व को देखा है , और जो इन सब प्रश्नों को और इन अस्तित्व के तथ्यों को देख नहीं पता वही जड़ पदार्थ है। इस प्रकार ***फैक्टिसिटी*** का अर्थ है ***नोइंगनेस ऑफ़ द पर्पस ऑफ़ एक्जिस्टेंस अस्तित्व के उद्देश्य को जानना ही फैक्टिसिटी है*** और जो यह नहीं जानता वह अस्तित्व नहीं जानता वही जड़ पदार्थ है। ( हाईडेगर : 1927 पृ 48)

**3- फालिंगनेस**

इसका संबंध आत्मनिर्भरता से है और विकल्प की स्वतंत्रता से है। यह रियल मैन और रियल एक्जिस्टेंस या वास्तविक स्थिति की मूल विशेषता है। साधारण शब्दों में कहा जाए तो इसका अर्थ है अस्तित्व के सम्मुख एक प्रकार से मनमानी करने की विकल्प की स्वतंत्रता होती है। कालांतर में अस्तित्ववाद से ही ***स्वतंत्रेच्छावादियों*** ने नकारात्मक स्वतंत्रता का विचार मूल रूप से प्राप्त किया था।

हाईडेगर फॉलिंगनेस के माध्यम से मानवीय अस्तित्व को बाइबिल की उसे धार्मिक गुलामी से मुक्त करना चाहते हैं जिसमें वह मानता है कि ईश्वर ने आदम को दंडित करके धरती पर भेजा जिसके कारण एक पापी मनुष्य की अवधारणा हजारों साल तक विद्यमान रही ,और इस पापी मनुष्य की अवधारणा के आधार पर चर्च ने हजारों साल राज किया । अपनी इस सिद्धांत के द्वारा हाईडेगर बताते हैं की रियल मैन या दासेन के सामने सारे विकल्पों की स्वतंत्रता है । उसका अपने अस्तित्व पर नियंत्रण है। वह इस संसार में आया है, या फेंका गया है, या गिरा है, जैसा भी है लेकिन अब उस पर उसका स्वयं का नियंत्रण है । उसके पैदा होने का कोई उद्देश्य नहीं है, लेकिन पैदा होने के बाद उसके अस्तित्व पर उसका नियंत्रण है । वह क्या बनेगा ? यह नियति का विधान नही है, यह पहले से तय नही है बल्कि यह वही तय करेगा ,उस पर उसका संपूर्ण नियंत्रण है । अतः फॉलिंगनेस के माध्यम से हाइडेगर मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक की व्याख्या करते हैं । जन्म का उद्देश्य निरूद्देश्य है और मृत्यु एक फैक्ट है लेकिन इसका मोक्ष या निर्माण से कोई संबंध नहीं है इसका अर्थ केवल इतना ही है कि यह शरीर मृत हो गया है । ***रियलमैन*** को मृत्यु का बोध होता है, ज्ञान होता है, लेकिन उसे वह नश्वरता नहीं मानता । नश्वरता कोई तथ्य नहीं है । हाईडेगर कहते हैं की ***कॉन्शसनेस ऑफ़ डेथ*** जरूरी है लेकिन इससे भयाक्रांत होकर अपने अस्तित्व को दूसरे ऑब्जेक्ट में ढूंढना और मरने के बाद जीवित रहने की मूर्खता में पड़ कड़ना अस्तित्व को निकारना है । दासेन ***लिविंग अहेड*** है वह अपनी जिम्मेदारियों को पहचानता है अपनी जिम्मेदारियां पूर्ण करता है लेकिन ऐसा वह पुण्य कमाने के लिए नहीं करता बल्कि ***परपज आफ एक्जिस्टेंस - अस्तित्व के उद्देश्य*** के लिए करता है ।

*" समग्रता, अंत और जो अभी भी बाहर है, के हमारे विचारों से, मृत्यु की घटना को अंत की ओर होने वाली सत्ता के रूप में व्याख्या करने और ऐसा दासेन की मूल स्थिति के संदर्भ में करने की आवश्यकता उभरी है। केवल इस तरह से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि अंत की ओर होने वाली सत्ता द्वारा गठित एक संपूर्ण सत्ता, दासिन में अपनी सत्ता की संरचना के अनुरूप किस हद तक संभव है। हमने देखा है कि देखभाल दासिन की मूल स्थिति है। "देखभाल" अभिव्यक्ति का ऑन्कोलॉजिकल अर्थ 'परिभाषा' में व्यक्त किया गया है: "अपने आप से आगे-पहले से ही (दुनिया में) सत्ता के रूप में सत्ता-साथ-साथ उन संस्थाओं के रूप में जिनका हम सामना करते हैं (दुनिया के भीतर)"। इसमें दासिन की सत्ता की मौलिक विशेषताएँ व्यक्त की गई हैं: "अपने आप से आगे" में अस्तित्व; **फैक्टिसिटी** - "पहले से ही अंदर होना"; **फालिंगनेस** , "साथ-साथ होना" में। यदि वास्तव में मृत्यु डेसीन के होने से एक विशिष्ट अर्थ में संबंधित है, तो मृत्यु (या अंत की ओर होना) को इन विशेषताओं के संदर्भ में परिभाषित किया जाना चाहिए। "* ( हाईडेगर : 1927 पृ 293)

**कान्सेप्ट आफ टाइम**

रियल मैन या बीइंग या दासीन के संदर्भ में इसका बहुत अधिक महत्व है । जो रियल मैन अस्तित्वमान है अर्थात दासेन उसे टाइम का बोध होता है । हाईडेगर कहते हैं " यू कनॉट चेंज द पास्ट, यू कनॉट चेंज द फ्यूचर," । हाईडेगर के अनुसार हम भूतकाल को बदल सकते हैं ना भविष्य हमे पता नही इसलिए वर्तमान में ही कार्य करना है । जो निर्धारित होता है तो जो है वह वर्तमान है तो

वर्तमान समय ही समय है भविष्य का समय इसी में नीहित है था भूतकाल का समय भी इसी में नीहित है। भूतकाल को हम बदल नहीं सकते लेकिन भविष्य के बदलने की हमारे पास विकल्प है। इसीलिए वह बीइंग एंड टाइम में बीइंग के साथ टाइम के महत्व को स्थापित करते हैं टाइम से उनका आशय अस्तित्व से ही है क्योंकि जो अस्तित्वमान है वह वर्तमान में है और समस्त क्रियाएं भी वर्तमान में होनी है रियलमैन के पास पोटेंशियल्टी का विकल्प है इसलिए वह अपने विकल्पों के अनुसार कार्य करता है।

**बीइंग इन जनरल Being in General**

हाइडेगर चूंकि नास्तिक है इसलिए इसलिए वह मनुष्य का अस्तित्व कार्य कारण के आधार पर सिद्ध नही करना चाहता था। क्योंकि तर्कशास्त्र के अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई कारण अवश्य होता है तथा मनुष्य के अस्तित्व का कारण उससे उच्चतर ही हो सकता है अतः ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना पड़ेगा। किंतु चूंकि हाइडेगर नास्तिक है इसलिए ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता सकता। इसलिए वह कहता है कि मनुष्य के अस्तित्व का कोई कारण नहीं है बीइंग इन जनरल के माध्यम से वह रियल मैन के एक्जिस्टेंस को व्याख्यायित करता है। रियल मैन का एक्जिस्टेंस अकारण है, स्वयंभू है, उसका कोई कारण नहीं है। इसलिए बीइंग इन जनरल का अर्थ है उसका अस्तित्व अकारण है। जैसे उसका स्वयं का अस्तित्व है वैसे दूसरे मनुष्यो का भी अस्तित्व है और अपने पर्यावरण में सभी एक दूसरे के अस्तित्व के प्रति सजग है। जैसे डसेन दूसरे को देख रहा है वैसे ही दूसरे डसेन को देख रहे हैं।

वसुतुतः हाईडेगर हीगल से अलग एक ऐसी ओंटोलॉजी खड़ा करना चाहते थे जिसमें एक्जिस्टेंस का कोई कारण न हो जिसे तर्कशास्त्र के आधार पर परिभाषित न किया जा सकता हो, क्योंकि तर्कदोष में ही सारी समस्या है। कार्य-कारण संबंध में एक प्रकार का अनावस्था दोष होता है, जो या ना तो कहीं से शुरू होता है और न ही कहीं खत्म हो सकता है। इसलिए एक्जिस्टेंस अकारण है। दासेन जो द्रष्टा है, जो धारकहै, धारण करता है वह निरपेक्ष है, अकारण है किंतु पोटेंशियल है।

*" लेकिन हम इस इकाई, डेसीन की ओर अपनी दृष्टि कैसे स्थापित कर सकते हैं। दासिन से संबंधित होने का प्रकार ऐसा है कि अपने स्वयं के अस्तित्व को समझने में, यह उस इकाई के संदर्भ में ऐसा करने की प्रवृत्ति रखता है जिसके प्रति यह खुद को समीपस्थ रूप से और एक तरह से व्यवहार करता है जो अनिवार्य रूप से स्थिर है - 'दुनिया' के संदर्भ में। दासिन में ही, और इसलिए होने की अपनी समझ में, जिस तरह से दुनिया को समझा जाता है, वह, जैसा कि हम दिखाएंगे, दासिन की व्याख्या करने के तरीके पर वापस ऑन्टोलॉजिकल रूप से प्रतिबिंबित होता है। इस प्रकार क्योंकि दासिन ऑन्टोलॉजिकल रूप से पूर्ववर्ती है, इसलिए होने की अपनी विशिष्ट स्थिति (यदि हम इसे दासिन की 'श्रेणीबद्ध संरचना' के अर्थ में समझते हैं) इससे छिपी रहती है। दासिन ऑन्टिकल रूप से खुद के 'सबसे करीब' है और ऑन्टोलॉजिकल रूप से सबसे दूर है; लेकिन प्री-ऑन्टोलॉजिकल रूप से यह निश्चित रूप से अजनबी नहीं है। "* ( हाईडेगर : 1927 पृ 48)

**बीइंग इन द वर्ड**

यह बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है इसके माध्यम से हाईडेगर रियलमैन के अस्तित्व को विश्व में होना प्रमाणित करते हैं। वस्तुत: उनके अस्तित्व की समस्त व्याख्या इसी पर आधारित है। वह साफ-साफ कहते हैं कि ***यदि रियल मैन है तो वह संसार में ही होगा संसार से बाहर रियलमैन का कोई अस्तित्व नहीं है।*** दुनिया से अलग यह दुनिया से बाहर मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है। वास्तव में अस्तित्ववादियों के अनुसार विज्ञान ने मनुष्य का नाश कर दिया है विज्ञान ने मनुष्य को विज्ञान को गुलाम बना दिया है लेकिन मनुष्य साइंस का गुलाम नहीं है। मनुष्य के अस्तित्व को समझने के लिए विज्ञान और तर्क की आवश्यकता नहीं है। ***रियलमैन इज इस इटरनल*** , अस्तित्व आन्तरिक है। **रियलमैन को समझने के लिए सत्ताओं को समझना जरूरी होता है।** रियल में जिसे अंग्रेजी में कैपिटल ***B*** से प्रकट करते है जिसे ***सत्*** कहा जाता है इसके अस्तित्व की प्राप्ति **सत्ताओ ( स्माल b** से प्रकट करे है ) के द्वारा होती है । ***रियल थिंग्स टू बी नोन*** रियलमैन को जानने की आवश्यकता है और इसे सत्ताओ के माध्यम से ही जाना जा सकता है। जबकि हीगल ने इसकी मैटाफिजिकल व्याख्या करके से काल्पनिक कैटिगरीज और भगवान के माध्यम से जानने की कोशिश की । लेकिन हाईडेगर के अनुसार **मैन इन द वर्ल्ड** में जो बाहरी सत्ताएं हैं वह रियलमैन की पोटेंशियल्टी का परिणाम है। इसकी हाईडेगर बहुत लंबी व्याख्या देते हैं और ***मोड्स*** के माध्यम से इसे समझाने का प्रयत्न करते हैं। वह ***अनेक मोडों*** की चर्चा करते हैं जिसमें एक महत्वपूर्ण मोड़ है ***केयर एंड कंसर्न*** । ***स्पिनोजा*** की यह बात गलत है कि सारे इमोशंस बंधन का कारण है आदि शंकराचार्य ने भी कहा था कि पाप पुण्य दोनों ही बंधन का कारण है मोक्ष के लिए इन दोनों से मुक्त होना होगा तभी आवागमन से मुक्त हो सकते हैं। किंतु हाईडेगर के अनुसार यह सब काल्पनिक बातें हैं बंधन और मोक्ष काल्पनिक बातें हैं । रियल मैन दुख में दुखी होता है सुख में सुखी होता है ***उसे लगाव -केयर होता है उसे परवाह- कंसर्न होता है***। और यह साधारण इमोशन है। इन्हीं के माध्यम से संसार को समझाया जा सकता है। इन्हीं के माध्यम से संसार के साथ रियलमैन का एक्जिस्टेंस रिएक्ट करता है, शह दुखी होता है सुखी होता है। उसे कार्य करने की स्वतंत्रता है उसके पास विकल्पों की स्वतंत्रता है उसके किसी विकल्प से वह स्वयं या दूसरे दुखी हो सकते हैं। जैसे अगर उसने कोई बुरा काम करने का विकल्प चुना है तो यह बुरे संवेग को जन्म देगा लेकिन उसने कोई अच्छा काम का विकल्प लिया तो अच्छे संवेग को जन्म देगा। यह संवेग सत्य है। इससे भागना आवश्यक नहीं है इस प्रकार बीइंग इन द वर्ल्ड के माध्यम से हिईडेगर यह बताते हैं की रियलमैन का अस्तित्व बाहरी सत्ताओ हसे गुजरते हुए ही समझा जा सकता है ।

**" *पहला संयुक्त अभिव्यक्ति*** *'विश्व में होना' उसी तरह से इंगित करती है जिस तरह से हमने इसे गढ़ा है, कि यह एकात्मक घटना का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्राथमिक डेटा को समग्र रूप से देखा जाना चाहिए। लेकिन जबकि विश्व में होने को ऐसी सामग्री में नहीं तोड़ा जा सकता है जिसे एक साथ जोड़ा जा सकता है, यह इसकी संरचना में कई घटक वस्तुओं को रखने से नहीं रोकता है। वास्तव में, हमारी अभिव्यक्ति जिस घटनात्मक डेटा को इंगित करती है, वह वास्तव में तीन तरीकों से देखी जा सकती है। यदि हम इसका अध्ययन करते हैं, तो पूरी घटना को पहले से ही दृढ़ता से ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित वस्तुओं को जोर देने के लिए सामने लाया जा सकता है:*

*सबसे **पहले**, 'विश्व में'। इसके संबंध में 'विश्व' की ऑन्टोलॉजिकल संरचना की जांच करने और इस तरह से विश्वत्व के विचार को परिभाषित करने का कार्य उठता है।*

***दूसरा**, वह **संपूर्णता** जो हर मामले में दुनिया में होने के रूप में है। यहाँ हम वह खोज रहे हैं जिसकी खोज तब की जाती है जब कोई यह प्रश्न पूछता है कि 'कौन?' एक घटनात्मक प्रदर्शन द्वारा हम यह निर्धारित करेंगे कि डेसीन की औसत रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कौन है।*

***तीसरा**, इस तरह से होना [इन-सीन]। हमें इनहुड [इनलिएट] के ऑन्टोलॉजिकल संविधान को स्वयं स्थापित करना चाहिए। इन घटक वस्तुओं में से किसी एक पर जोर देने का अर्थ है कि अन्य पर भी इसके साथ जोर दिया जाता है; इसका मतलब है कि ऐसे किसी भी मामले में पूरी घटना दिखाई देती है। बेशक दुनिया में होना डेसीन की एक अवस्था है जो पहले से ही आवश्यक है, लेकिन यह डेसीन की सत्ता को पूरी तरह से निर्धारित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।"* ( हाईडेगर : 1927 पृ 48 )

**अस्तित्व की विशेषताएं**

**1- अस्तित्व सार्वभौम है**

इसका अर्थ यह नहीं है कि अस्तित्व भगवान जैसे सब जगह विद्यमान है। इसका अर्थ यह है कि अस्तित्व सार्वभौमिक अवधारणा है अर्थात मनुष्य का अस्तित्व जहां है वहां वह विद्यमान है, वह जहां जाएगा उसका अस्तित्व विद्यमान होगा। अस्तित्व का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है किन्तु यह अस्तित्व किसी दूसरे ज्ञान पर आश्रित नहीं है इसे ही हाइडेगर ***रियल मैन वास्तविक मनुष्य*** कहते हैं वास्तविक मनुष्य का अस्तित्व किसी वंश जाति खानदान या किसी भी अन्य दूसरी अवधारणा पर आश्रृत नहीं है। इसीलिए इसीलिए वह नाजी वादी पार्टी में शामिल होने के बाद भी उससे अलग हो गए क्योंकि किसी भी मनुष्य का अस्तित्व किसी प्रजाति की पहचान पर निर्भर नहीं है। अस्तित्व किसी भी दूसरी अवधारणा से ऊपर है, यह जाति वंश संप्रदाय देश किसी भी दूसरी अवधारणा से ऊपर की अवधारणा है अपने आप में सर्वोत्तम पहचान है यह किसी भी प्रकार किसी पर आश्रित नहीं है। उसका अस्तित्व केवल इसलिए अस्तित्व है क्योंकि वह अस्तित्वमान है। इसकी कभी विषद व्याख्या वह ***बीईंग एण्ड टाइम*** में देते हैं - *" किसी भी चीज़ की अवधारणा में पहले से ही अस्तित्व की समझ शामिल है, लेकिन 'अस्तित्व' की 'सार्वभौमिकता' किसी वर्ग या वंश की नहीं है। 'अस्तित्व' शब्द संस्थाओं के उस क्षेत्र को परिभाषित नहीं करता है जो तब सबसे ऊपर होता है जब इन्हें वंश और प्रजाति के अनुसार संकल्पनात्मक रूप से व्यक्त किया जाता है, अस्तित्व की 'सार्वभौमिकता' वंश की किसी भी सार्वभौमिकता को 'पार' कर जाती है। "* [5]

वह अरस्तु से लेकर मध्ययुग की तमाम तत्वमिमांसीय और ज्ञानमिमांसीय व्याख्या को निरर्थक समझते थे और उसकी आलोचना करते थे। क्योंकि मध्य युग मे व्यक्ति और समस्त पदार्थ के अस्तित्व को धार्मिक पहचान से आरोपित करके उसके अस्तित्व को ही नष्ट कर दिया गया था। किंतु अरस्तु जैसे वैज्ञानिक ने भी अस्तित्व की व्याख्या किसी दूसरी अवधारणा के संदर्भ में ही की अर्थात

मनुष्य का अस्तित्व जैसे किसी दूसरे पर आश्रित है। उसे नागरिकता आदि वाक्य से उलझा दिया। अस्तित्व की ओंटोलॉजी किसी भी प्रकार के तर्कशास्त्र या न्याय शास्त्र पर खड़ी नहीं की जा सकती। ग्रीक एवं मध्य युग की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि-

*"मध्ययुगीन ऑन्टोलॉजी में 'अस्तित्व' को 'पारलौकिक' के रूप में नामित किया गया है। अरस्तू खुद इस पारलौकिक 'सार्वभौमिक' की एकता को चीजों पर लागू उच्चतम सामान्य अवधारणाओं की बहुलता के विपरीत सादृश्य की एक इकाई के रूप में जानते थे। इस खोज के साथ, प्लेटो द्वारा ऑन्टोलॉजिकल प्रश्न को जिस तरह से तैयार किया गया था, उस पर अपनी निर्भरता के बावजूद, उन्होंने अस्तित्व की समस्या को उस आधार पर रखा जो सिद्धांत रूप में एक नया आधार था। निश्चित रूप से, अरस्तू भी इन श्रेणीबद्ध अंतर्संबंधों के अंधेरे को दूर करने में विफल रहे। मध्ययुगीन ऑन्टोलॉजी में इस समस्या पर व्यापक रूप से चर्चा की गई थी, विशेष रूप से थॉमिस्ट और स्कॉटिस्ट स्कूलों में, सिद्धांतों के बारे में स्पष्टता तक पहुंचे बिना। और जब हेगेल अंत में 'अस्तित्व' को 'अनिश्चित तात्कालिक' के रूप में परिभाषित करता है और इस परिभाषा को अपने 'तर्क' के सभी आगे के श्रेणीबद्ध स्पष्टीकरणों के लिए बुनियादी बनाता है, तो वह प्राचीन ऑन्टोलॉजी की तरह ही उसी दिशा में देखता रहता है।"* ( हाईडेगर : 1927 पृ 49 )

हाईडेगर इस बात से सावधान करते हैं की अस्तित्व के सार्वभौमिक होने का अर्थ यह नहीं है कि यह पूरी तरह जाना जा चुका है और हर व्यक्ति उस ***रियलमैन*** को जानता है। यह रियल मैन यद्यपि ज्ञान का विषय है किंतु यह विषयनिष्ठ है अर्थात अपने अंदर स्वयं में समाहित है इसकी सत्ता किसी दूसरी पर आश्रित नहीं है। इसी दृष्टि से यह सार्वभौमिक है न कि इस दृष्टि से कि यह सर्वज्ञ है ।

**2- अस्तित्व' की अवधारणा अनिश्चित है।**

हाईडेगर अस्तित्व का ज्ञान अपने आप में चुनौती चुनौतीपूर्ण है। यह सार्वभौमिक है किंतु अनिश्चित है। अनिश्चित इसलिए है क्योंकि यह तय नहीं किया जा सकता कि यह निम्नतम ज्ञान से ऊपर है या उच्चतम ज्ञान से ऊपर है क्योंकि यह किसी भी ज्ञान पर आश्रित नहीं है। इसमें श्रेष्ठता का प्रश्न उपस्थित नहीं होता बल्कि अस्तित्व का प्रश्न उपस्थित होता है और यह प्रश्न हमेशा उपस्थित रहता है। अस्तित्व का ज्ञान कभी भी अंतिम ज्ञान नहीं हो सकता हमेशा अस्तित्व को जानने की संभावना बनी रहती है। अस्तित्व के आधार पर अर्थात अस्तित्व की विषयनिष्ठता के आधार पर बाह्य जगत का ज्ञान होता है न कि बाह्य जगत के आधार पर अस्तित्व का ज्ञान होता है, यही मूल विषय है यही ***दासेन*** है जो विषयनिष्ठ है इसलिए हाईडेगर कहते हैं कि -

*"यह इसकी सर्वोच्च सार्वभौमिकता से निकाला गया है। "अस्तित्व" को परिभाषा के अनुसार उच्चतर अवधारणाओं से प्राप्त नहीं किया जा सकता है, न ही इसे निम्नतर अवधारणाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।*

*अस्तित्व की अपरिभाष्यता उसके अर्थ के प्रश्न को समाप्त नहीं करती; यह मांग करती है कि हम उस प्रश्न का सामना करें।इसलिए यदि यह कहा जाता है कि 'अस्तित्व' सबसे सार्वभौमिक अवधारणा है, तो इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि यह सबसे स्पष्ट अवधारणा है या इस पर आगे चर्चा की आवश्यकता नहीं है। यह सबसे अंधकारमय अवधारणा है।"* ( हाईडेगर : 1927 पृ 50 )

**3- अस्तित्व' सभी अवधारणाओं में से एक है जो स्वयंसिद्ध है।**

जब भी कोई किसी चीज को पहचानता है या कोई दावा करता है, जब भी कोई सत्ताओं के प्रति, यहाँ तक कि स्वयं के प्रति भी व्यवहार करता है, तो 'सत्ता' का कुछ उपयोग अवश्य होता है; और इस अभिव्यक्ति को 'बिना किसी और बात के' समझने योग्य माना जाता है, जैसे हर कोई समझता है "आसमान नीला है', 'मैं खुश हूँ',

और इसी तरह। लेकिन यहाँ हमारे पास एक औसत किस्म की समझदारी है, जो केवल यह दर्शाती है कि यह समझ से बाहर है। यह स्पष्ट करता है कि किसी भी तरह से संस्थाओं के प्रति संस्थाओं के रूप में व्यवहार करने में - यहाँ तक कि किसी भी सत्ता में संस्थाओं के रूप में संस्थाओं के प्रति - एक पूर्व-कल्पना रहस्य है। यह तथ्य कि हम पहले से ही अस्तित्व की समझ में जी रहे हैं और यह कि अस्तित्व का अर्थ अभी भी अंधेरे में छिपा हुआ है, यह साबित करता है कि सिद्धांत रूप में इस प्रश्न को फिर से उठाना आवश्यक है। संस्थाओं का अस्तित्व स्वयं एक संस्था नहीं है। अगर हमें सत्ता की समस्या को समझना है, तो हमारा पहला दार्शनिक कदम यह है कि हम कोई कहानी न सुनाएँ- यानी, संस्थाओं को उनकी उत्पत्ति में किसी अन्य संस्था से जोड़कर संस्थाओं के रूप में परिभाषित न करें, मानो सत्ता में किसी संभावित संस्था का चरित्र हो। इसलिए, जिस बारे में पूछा जाता है, उसे अपने तरीके से प्रदर्शित किया जाना चाहिए, जिस तरह से संस्थाओं की खोज की जाती है, उससे अनिवार्य रूप से अलग। तदनुसार, पूछने से जो पता चलना है-अस्तित्व का अर्थ-यह भी मांग करता है कि इसे अपने तरीके से समझा जाए, अनिवार्य रूप से उन अवधारणाओं के विपरीत जिसमें संस्थाएँ अपना निश्चित अर्थ प्राप्त करती हैं। जहाँ तक अस्तित्व वह है जिसके बारे में पूछा जाता है, और "अस्तित्व" का अर्थ है संस्थाओं का अस्तित्व, तो संस्थाएँ स्वयं ही वह बन जाती हैं जिसके बारे में पूछताछ की जाती है। इनसे, यूँ कहें कि, उनके अस्तित्व के बारे में पूछताछ की जाती है। लेकिन अगर उनके अस्तित्व की विशेषताओं को मिथ्याकरण के बिना प्रस्तुत किया जा सकता है, तो इन संस्थाओं को, अपनी ओर से, अपने आप में सुलभ होना चाहिए। जब हम उस पर आते हैं जिसके बारे में पूछताछ की जानी है, तो अस्तित्व के प्रश्न के लिए यह आवश्यक है कि संस्थाओं तक पहुँचने का सही तरीका पहले से ही प्राप्त और सुरक्षित किया गया हो। लेकिन ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें हम 'अस्तित्व' ("सेइंड") के रूप में नामित करते हैं, और हम ऐसा विभिन्न अर्थों में करते हैं। हम जिस बारे में बात करते हैं, जो कुछ भी हमारे सामने है, जो कुछ भी हम किसी भी तरह से व्यवहार करते हैं, वह सब होना है; हम जो हैं, वह होना है, और इसी तरह हम जैसे हैं। होना इस तथ्य में निहित है कि कुछ है, और जैसा है वैसा ही उसका होना; वास्तविकता में; उपस्थिति में; अस्तित्व में; वैधता में; डेसीन में; 'वहाँ है' में। किन संस्थाओं में होने का अर्थ समझा जाना चाहिए? किन संस्थाओं से होने का प्रकटीकरण अपनी शुरुआत लेता है? क्या शुरुआती बिंदु वैकल्पिक है, या जब हम होने के प्रश्न पर काम करने के लिए आते हैं तो क्या कोई विशेष इकाई प्राथमिकता रखती है? हम किस इकाई को अपने उदाहरण के लिए लेंगे, और किस अर्थ में इसकी प्राथमिकता है? यदि होने के बारे में प्रश्न को स्पष्ट रूप से तैयार किया जाना है और इस तरह से आगे बढ़ाया जाना है स्वयं के प्रति पूर्णतया पारदर्शी है, तो हमारे द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के अनुरूप इसके किसी भी उपचार के लिए हमें यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि सत्ता को किस प्रकार देखा जाना चाहिए, इसके अर्थ को कैसे समझा

जाना चाहिए और अवधारणात्मक रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए; इसके लिए हमें अपने उदाहरण के लिए सही इकाई को चुनने का मार्ग तैयार करने और उस तक पहुँच का वास्तविक मार्ग निकालने की आवश्यकता है।

**अबुद्धिवाद**

वस्तुतः बुद्धि के आधार पर अस्तित्व की बाह्य व्याख्या भ्रामक है। बुद्धि के आधार की व्याख्या ना केवल असंभव है बल्कि अनुचित भी है क्योंकि बुद्धि के आधार पर अस्तित्व को जाना ही नहीं जा सकता। सांसारिक जगत की समस्त चीजे नश्वर है अतः अस्तित्व भी नश्वर है, यहां तक वह सार्त्र की व्याख्या से सहमत है वह लेकिन यह इससे आगे जाकर यह मानता है कि **अस्तित्व में ही अस्तित्व की संभावना भी होती है** अतः अस्तित्व नश्वर नही है। जब हम यह कहते हैं कि "हम हैं " तब इसमें हमारे होने की संभावना भी नीहित है। अतः यह अस्तित्व निरर्थक होने के बावजूद नश्वर नहीं है क्योंकि उसकी होने की संभावना निरंतर बनी हुई है।

हाईडेगर न केवल अबुद्धिवादी है बल्कि वह बुद्धिवाद की कठोर आलोचना भी करता है। वह कहता है कि मनुष्य पापी इसलिए नहीं है क्योंकि वह जन्नत से निकाला गया बल्कि मनुष्य पापी इसलिए है कि उसने ज्ञान का फल खा लिया। अधिकांश समस्याओं की जड़ यही है कि हम उसकी व्याख्या बुद्धि के आधार पर करते हैं और अनुभूति की अवहेलना कर देते हैं। इस आधार पर सापेक्ष जगत की व्याख्या संभव नहीं है यदि इसकी व्याख्या की गई तो वह दोषपूर्ण ही रहेगी क्योकि किसी एक पदार्थ या वस्तु के कई नाम और अर्थ होते हैं, यही स्थिति विचारो की भी है। इसलिए बुद्धि के आधार पर व्याख्या न केवल भ्रामक होगी बल्कि वह किसी भी प्रकार के ज्ञान में वृद्धि नहीं करेंगी क्योंकि **हमारे ज्ञान का वास्तविक शुद्ध स्रोत बुद्धि नहीं बल्कि अनुभूति है।**

**गाड इज डेड**

यह उसका बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है जो नीत्शेहाइडेगर के नाम से जाना जाता है। ( लुफ्त : 1984) इसकी वह दार्शनिक व्याख्या भी करता है। हाइडेगर के अनुसार डरपोकपन, असफलता और बेरोजगारी, अस्तित्व के निर्थक होने का भाव मनुष्य में पैदा करता है। अभी तक धार्मिकता जनित नियतिवाद मनुष्य को एक मानसिक सहारा देता रहा है जिससे वह अपनी असफलताओं और शोषण को भूल सके। लेकिन ईश्वरवाद मनुष्य की निराशा दूर नही कर सकता इसीलिए वह कहता है कि **गाड इज डेड।** अतः वह आह्वान करता है कि **भगवान की ओर परिवर्तन के लिए मत देखो क्योकि ईश्वर मर गया है।** प्रश्न उठता है कि यदि ईश्वर मर गया है तो इस निराशा से बाहर निकालने की जिम्मेदारी किसकी है या कौन सहायक बनेगा ? इसके लिए वह एक महान व्यक्तित्व की बात करता है और कहता है कि महान नेतृत्व और नेता लोगों को राष्ट्र निर्माण के द्वारा इस डरपोकपन और कुंठा की भावना से बाहर निकालेगा इसलिए वह हिंसा और नेतृत्व पूजा की दार्शनिक व्याख्या करता है।

**मूल्यांकन**

वस्तुतः मार्टिन हाइडेगर दार्शनिक है। अतःअस्तित्ववादी होने के बावजूद उसके विचारों में काफी भ्रामकता दिखाई देती है। क्योंकि वह दोनों ही बात करता है। वह एक ओर यह मानता है कि अस्तित्व की व्याख्या बाहरी जगत के आधार पर नहीं की जा सकती वहीं दूसरी ओर वह अस्तित्व मे एक निरंतरता भी मानता है। अस्तित्व में निरंतरता वास्तव में ईसाइयत की धारणा के अनुकूल है इस दृष्टि से पूरी तरह नास्तिक भी नहीं है। इसलिए उसके चिन्तन मे हर समय एक विरोधाभास दिखाई देता है। वह नास्तिक भी है लेकिन वह इसाईयत की निरंतरता की विचार में भी विश्वास करता हुआ दिखाई देता है। वह नाजीवादी भी था लेकिन बाद में उसने नाजीवाद की सदस्यता भी छोड़ दी। इसलिए उसके राजनीतिक चिंतन में एक ठहराव नहीं है वह लगातार उसके विचार बदलते रहे हैं और उसके विचारों में विरोधाभास है। लेकिन फिर भी राजनीतिक चिंतन को और दर्शनशास्त्र को मार्टिन हाइडेगर का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। हन्ना अरेण्ट पर इसका बहुत ही ज्यादा गंभीर प्रभाव पड़ा था। अतः कहा जा सकता है कि मार्टिन हाइडेगर का अस्तित्ववाद अनेक राजनीतिक दार्शनिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है।

**संदर्भ**

1- मार्टिन हाईडेगर : बीइंग एण्ब टाइम 1927 पृ 21

2- तदैव पृ 22

3- तदैव पृ 37

4- तदैव पृ 48

5- तदैव पृ 36

6- एरिक वॉन डेर लुफ्ट : नीत्शे का "ईश्वर मर चुका है!" और हाइडेगर के लिए इसका अर्थ, जर्नल ऑफ़ द हिस्ट्री ऑफ़ आइडियाज़, अप्रैल-जून, 1984, खंड 45, संख्या 2 (अप्रैल-जून, 1984), पृष्ठ 263-276 यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिल्वेनिया प्रेस